Maithili (Hons)

Paper - II

Prof. Raj Kumar [illegible]
J.K. College, Biraul, DBG

सप्रसंग व्याख्या

"लोके अदरा बिन बरखे जायत। लछमन-क्रम सभय शेहीक थ' नेने रहैक। मुदा नै। चारिम राति खूब बरिसल। मुसलाधार। भरि राति झुपानो झहरल मेघ। मुदा तइयो कतहु लागत जे पानि भेलइए।"

प्रस्तुत गद्यांश श्री ललितजीक पृथ्वीपुत्र उपन्याससँ लेल गेल अछि। बकुरबन्नाक खेतिहर किसान मजदूर अपना खेतमे सुखजोत गोतैत सरलक मनोभावक अभिव्यक्ति थिक। पानि भेलो पर कतहु नहि बुझाइत कारण सम्पूर्ण बकुरबन्नाक भूमिमे बालुए-बालु जे पानि सोखबामे सक्षम रहइछ। चारिम राति एतेक मुसलाधार बारिश भेलैक तथापि कतहु खेतमे पानि भेलैक सेहो नहि बुझाइत छलैक, तेँ की किसानक किसानी चलतै? डाक वचन अछि- 'आदि आर्द्रा अन्त हस्त, तखने नाथे गृहस्थ।' से अदरा जेना बिन बरसे चल जायत। सभ लक्षणक्रम शेहीक भेल आ ढरल छैक।

"जिबैत रहब पहिने जरूरी छैक संसार मे। तखन लोक-लाज। नीक-बेजाय सभटा अधार छैक।"

—x—

प्रस्तुत गद्यांश श्री ललितजी रचित पृथ्वीपुत्र उपन्याससँ उद्धृत अछि। पृथ्वीपुत्रक समस्त घटनाक्रम यथार्थक धरातल पर घटित अछि। बबुरबन्नाक पासवान टोलक बिसेखी पासवानक बेटी बिजली जकर बिआह रेलवेके पैटमैन हीरालाल सँ भेल छै। बिजली पतिके संग रेलवेक क्वाटरमे रहैत अछि। बिजलीक पूर्वक प्रेम-प्रसंग कथा हीरालालकेँ ज्ञात भेइत छै त' ओ बिजलीक संग मारि-पीट करैत अछि, ड्यूटी पर जाइत अछि त' क्वाटरमे ताला ठोकि क' जाइत अछि। जे बिजली पक्षी जकाँ स्वच्छन्द विचरण करयवाली से ओहि छोट क्वाटर धाजति जकाँ बन्द भ' क' रहि जाइछ। ओकरा पर आर मनक चोटक प्रभाव छै। ओ निःप्राण पड़ल छल, तखन ओकर नजरि खिड़की बाटे आकाश दिस जाइत छै। इजोरिया आगाँ गेल रहैक। ओ अपन दशा पर छड़पटा उठल। आब हम एतय नहि रहि सकैत छी, एतय रहब त' हम मरि जायब कुहरि-कुहरिकेँ नहि- आब नहि। जिबैत रहब पहिने जरूरी छैक संसारमे तखन लोक-लाज, नीक-बेजाय।

बिजलीक अंतिम संकल्पसँ 'जिबैत रहबा लेल' क्वाटरक छहरदेवाली फानि बाहर भेल ओ राता-राति नैहर चलल अबैत अछि।